विचार बिन्दु

जहाँ नक़ल है वहां खाली दिखावट होगी, जहाँ खाली दिखावट है वहां मूर्खता होगी। –जॉन्सन

पेपर लीक काण्ड: कुछ प्रासंगिक बातें

एक पुराना कथन है जिसका आशय यह है कि ताले तो साहूकारों के लिए होते हैं, चोर तो चोरी करने का कोई न कोई तरीका निकाल ही लेता है। यह कथन मुझे इन दिनों बहुत याद आ रहा है। कारण है इधर कुछ समय से बार-बार घटित होने वाले पेपर लीक काण्ड। मेरा संबंध शिक्षा की दुनिया से रहा है और परीक्षाओं के तंत्र को मैंने भीतर से देखा है। उसकी जटिलताओं से, कमियों से, चुनौतियों से मैं बहुत अच्छी तरह से परिचित हूं। और यही वजह है कि हाल में हुए पेपर लीक काण्ड के बारे में जब मैं लोगों के, और विशेषत: नेताओं के बहुत ग़ैर ज़िम्मेदारी भरे बयान पढ़ता हूं तो जी बहुत दुखता है। बेशक प्रतिपक्ष का काम सत्ता पक्ष की कमियों को उजागर करना है और अगर वह यह न करेगा तो अपने कर्तव्य निर्वहन में कोताही बरतेगा। लेकिन यह भी देखना होगा कि ऐसा करते हुए वह अपनी मर्यादा, सीमाओं और औचित्य का उल्लंघन न कर जाए। इधर जब मैं प्रतिपक्ष के कुछ नेताओं के बयान पढ़ता हूं तो मुझे लगता है कि पेपर लीक की पूरी प्रक्रिया की स्क्रिप्ट उनके पास है। वे सब कुछ जानते हैं। और जब यह लगता है तो मुझे हंसी भी आती है और क्षोभ भी होता है। राज्य की पुलिस और अन्य जांच एजेंसियां अपना काम कर रही हैं। यह सारा काण्ड इतना सरल भी नहीं है कि आप तुरंत किसी नतीज़े पर पहुंच जाएं। जिन लोगों ने इस वारदात को अंजाम दिया है उन्होंने पूरी तैयारी के साथ यह कुकर्म किया है। उनकी कार्य पद्धित दो और दो चार जैसी सरल नहीं है। क्या हम जांच एजेंसियों से यह उम्मीद कर सकते हैं कि वे पलक झपकते ही अपराधियों को दबोच लेगी? लेकिन हमारे कई प्रतिपक्षी अपने बयानों से यही आभास दे रहे हैं जैसे उन्हें सब कुछ पता है। मुझे चिंता यह होती है कि उनकी इस तरह की बयानबाजी पुलिस की जांच प्रक्रिया में तो बाधा पहुंचाती ही है, भोले और पूरी प्रक्रिया से नावाक़िफ़ नागरिकों को भी उन लोगों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त करती है जो दोषी नहीं हैं।

परीक्षा प्रक्रिया से अपने सुदीर्घ परिचय के आधार पर मैं बहुत दृढ़ता पूर्वक यह कह सकता हूं कि परीक्षा करवाने वाली विभिन्न एजेंसियां अपने अनुभवों के आधार पर निरंतर अपनी कार्यप्रणाली को सुधारती व उन्नत करती रहती हैं। गोपनीयता का तकाज़ा है कि इस बात को विस्तार से और खोलकर न कहा जाए, लेकिन यह एक तथ्य है कि आज परीक्षा आयोजित करना बहुत जटिल और उलझन तथा विशेषज्ञता भरा काम हो गया है। किसी भी परीक्षा में कम से कम दो तंत्र होते हैं। एक वह जो प्रश्न पत्र बनवाता और उन्हें मुद्रित करवा कर परीक्षा केंद्रों तक पहुंचाता है, और दूसरा तंत्र परीक्षा केंद्रों का होता है। कई बार बीच में एक तंत्र और आ जाता है जहां प्रश्न पत्र बनवाने और छपवाने वाले तंत्र से प्राप्त प्रश्न पत्र सुरक्षित रखे जाते हैं और फिर उन्हें परीक्षा केंद्रों तक भेजा जाता है। यह तंत्र सामान्यत: ज़िला प्रशासन का होता है, जैसे कोषागार। यहीं यह बात भी ध्यान देने की है कि कुछ बरस पहले तक जहां सामान्यत: योग्यता तय करने वाली परीक्षाओं के पर्चे आउट हुआ करते थे, आजकल सामान्यत: उन पर असामाजिक तत्वों की निगाह जाती ही नहीं है। बीए, एमए के पर्चे आउट करने में अब किसी की रुचि नहीं रह गई है। इसका कारण भी बहुत साफ़ है। परीक्षा में प्राप्त अंक आपको रोज़गार मिल जाने की गारंटी नहीं देते हैं। लगभग हर रोज़गार के लिए, सरकारी नौकरी के लिए अलग से परीक्षा होती है। कई बार एक से अधिक परीक्षाएं भी होती हैं। पेपर आउट करवाने वालों का ध्यान इन्हीं परीक्षाओं पर रहता है।

परीक्षा के पर्चे लीक हो जाना ग़लत है। दुर्भाग्यपूर्ण है और कहीं न कहीं यह उन लोगों की नाकामयाबी का भी परिचायक है जिन के कंधों पर यह बड़ा और बहुत ज़िम्मेदारी का काम करवाने का दायित्व है। लेकिन इसी के साथ यह भी समझना ज़रूरी है कि परीक्षा का काम एक बहुत बड़ी टीम करती है और उस टीम में कमज़ोर कड़ी कहीं भी हो सकती है।

यह एक सर्व ज्ञात तथ्य है कि पिछले कुछ बरसों में सरकारी नौकरियों की संख्या में, बावज़ूद नेताओं की बड़ी-बड़ी घोषणाओं के, कमी हुई है। अगर कमी नहीं भी हुई है तो वे उस अनुपात में नहीं बढ़ी हैं जिस अनुपात में शिक्षितों की संख्या बढ़ी है। हमारे देश में सरकारी नौकरी के प्रति ग़ज़ब का आकर्षण है। इसके अनेक कारण हैं, और उन्हें सब जानते हैं इसलिए उनकी चर्चा अनावश्यक होगी। जो लोग मेहनती और प्रतिभाशाली हैं वे भले ही निजी क्षेत्र को आकर्षक पाएं, औसत प्रतिभा और योग्यता वालों को अपने जीवन की चरम उपलब्धि सरकारी नौकरी पा जाना ही लगती है। यही वजह है कि बहुत छोटी नौकरी के लिए भी बहुत अधिक योग्यता वाले अनगिनत उम्मीदवार पंक्तिबद्ध खड़े नज़र आते हैं। कुल मिलाकर एक अनार सौ बीमार वाली स्थितियां बनती हैं। और इन्हीं स्थितियों का फ़ायदा उठाते हैं कुछ असामाजिक तत्व। वे अपने कौशल (इसे और क्या कहें) का दुरुपयोग कर प्रश्न पत्र चुराते हैं और उन्हें बहुत ऊंचे दामों पर बेच कर मालामाल होते हैं। यह बात भी कम आश्चर्य पैदा नहीं करती है कि हमारे ही समाज में बहुत मोटी रकम देकर ग़लत तरीकोंसे परीक्षा की वैतरणी पार करने के इच्छुक भी खूब हैं। मुझे तो यह बात आश्चर्य चकित करती है कि जो लोग दस लाख रुपये जैसी मोटी रकम देकर प्रश्न पत्र खरीद सकते हैं वे इतने पैसों में तो कोई रोज़गार भी शुरू कर सकते थे जहां उन्हें उस नौकरी से तो ज़्यादा ही आय हो जाती। नौकरियों के भी झंझट कम नहीं होते हैं। आपको घर से दूर भी जाना पड़ता है, अदसरों की भी सुननी पड़ती है, और न जाने कितने संकट होते हैं। निजी व्यवसाय में यह सब नहीं होता। आप जहां रहते हैं वहीं अपना व्यवसाय कर सकते हैं। आपका कोई मालिक नहीं होता है। आप खुद अपने स्वामी होते हैं। असल में इतने पैसे खर्च करके अनैतिक तरीकों से नौकरी पाने की कोशिश करने वालों की बड़ी संख्या हमारे समाज की मानसिक बनावट में आ गई विकृति की भी सूचक है। समाज में एक वर्ग ऐसा तैयार होता जा रहा है जिसके लिए सही ग़लत की बात बेमानी है। उसके लिए महत्वपूर्ण यही है कि जैसे भी हो उसका काम निकल जाए। यह जो जैसे भी हो की प्रवृत्ति है, इसे अनदेखा करके हम अपने ही भविष्य को बिगाड़ रहे हैं। अब ऐसे लोगों को देख उनकी लालसाएं भी जागती हैं जो इनमें अपने लिए अमीरी के सपने देखते हैं। इधर पर्चे लीक करवाने वालों के वैभव पूर्ण जीवन की जो ख़बरें आ रही हैं वे चौंकाने वाली नहीं हैं। हम अपने चारों तरफ देखते हैं कि लोगों को इस बात से कोई मतलब नहीं रह गया है कि आपने पैसा कैसे कमाया है! वे केवल और केवल आपकी अमीरी देखते और उसे सराहते हैं। ऐसा लगता है जैसे हमने सही और ग़लत के बीच भेद करना बंद कर दिया है। आखिर ग़लत तरह से पैसे कमाकर अमीर बन जाने वाले और वैभवपूर्ण जीवन जीने वाले लोग हमारे ही समाज में रहते हैं। हमारी ही कॉलोनियों में रहते हैं। किसी का ध्यान इस बात पर क्यों नहीं जाता है कि उनके वैभव के स्त्रोत क्या हैं! इतना ही नहीं, उनका दुराचरण उजागर हो जाने के बाद भी उनका सामाजिक बहिष्कार शायद ही होता हो।

परीक्षा के पर्चे लीक हो जाना ग़लत है। दुर्भाग्यपूर्ण है और कहीं न कहीं यह उन लोगोंकी नाकामयाबी का भी परिचायक है जिन के कंधों पर यह बड़ा और बहुत ज़िम्मेदारी का काम करवाने का दायित्व है। लेकिन इसी के साथ यह भी समझना ज़रूरी है कि परीक्षा का काम एक बहुत बड़ी टीम करती है और उस टीम में कमज़ोर कड़ी कहीं भी हो सकती है। उस कड़ी को पहचाना और दण्डित किया जाए, यह उचित होगा लेकिन परीक्षा तंत्र से जुड़े हरेक को इस का दोषी बताया जाए, यह बहुत ग़लत होगा। इधर जिस तरह की बयानबाजियां हो रही हैं वे इसी ग़लती का परिचय देती हैं। यहीं यह भी कि दोषी को दण्ड देने की हमारी पूरी प्रक्रिया बहुत धीमी और फिसलन भरी है। यह बात सारे ही अपराधों के मामले में सत्य है। ऐसे में यह उम्मीद करना कि किसी एक अपराध में बहुत त्वरा से न्याय हो जाएगा, अव्यावहारिक होगा।

असल में परीक्षा के पर्चों कायह मामला पूरे परिवेश के संदर्भ में देखा और समझा जाना चाहिए। कोई भी घटना शून्य में घटित नहीं होती है। जब सारे समाज में बिगाड़ का माहौल हो तो उससे कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह सकता। मेरे इस कथन से यह न समझा जाए कि मैं इस बुराई का पक्ष ले रहा हूं। फिर कहूंगा कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है और दोषियों को जल्दी से जल्दी पकड़ा जाना और उन्हें ऐसा दंड दिया जाना ज़रूरी है जो औरों के लिए भी सबक साबित हो। इसी के साथ यह भी ज़रूरी है कि अब तक हुई चूकों से सबक लिया जाए और इस बात के गम्भीर प्रयास किए जाएं कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति हो। लेकिन इसी के साथ इस बात पर भी विमर्श ज़ारी रहना चाहिए कि कैसे सरकारी नौकरियों के प्रति इस दुर्निवार आकर्षण पर काबू पाया जाए! समस्या की असल जड़ तो वहीं है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

आज का ज्ञान, कल का विज्ञान, परसों का विकृतज्ञान।

इसे चरितार्थ करती कहानी है दूरबीन विधि से घुटने के उपचार की।

बुढ़ापे की निशानी जोड़ो का दर्द – ओस्टियोआर्थराइटिस। सबसे अधिक घुटने परेशान करते हैं। चलना-फिरना, उठना-बैठना मुश्किल होता जाता है। जोड़ो की चिकनाई खत्म हो जाती है। हाथी दाँत से चिकने जोड़ों के कार्टिलेज घिस कर खुरदरे हो जाते हैं। दोनों हड्डियों के बीच स्थित चन्द्राकार मेनिस्कस भी घिस कर क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। हड्डियों के सिरों पर नुकीले ओस्टियोफाइट्स उभर आते हैं। उनमें से कुछ क्षय हो कर बालू कण और कंकर से जोड़ में आ गिरते हैं और पीड़ादायक घर्षण पैदा करते हैं। जोड़ में चिकनाई बनाने वाली साइनोवियल मेम्ब्रेन में सूजन आ जाती है। यह था ज्ञान जो जोड़ के एक्स-रे, सूक्ष्मदर्शी परीक्षण व रासायनिक विश्लेषण से अर्जित किया गया।

उम्र आधारित अस्थिक्षरण (डिजेनेरेशन) रोग, इसे रोका तो नहीं जा सका, हाँ, आदि काल से वैज्ञानिकों ने इसके उपचार की अनेकानेक विधियाँ अवश्य विकसित कीं। बीसवीं सदी की ऐसी ही उन्नत, दूरबीन आधारित तकनीक, ओस्टियो आर्थराइटिस के उपचार की विधि विकसित हुई – आर्थोस्कोपिक शल्य क्रिया। इस क्रिया में सर्जन घुटने के आवरण में छेद करता है, रोशनी युक्त दूरबीन व अन्य सूक्ष्म औजारों को छेदों से अन्दर डालता है, जोड़ का भीतर से विस्तृत परीक्षण करता है, खुरदरे हिस्सों को समतल करता है, टूटे हुए टुकड़ों को बाहर निकालता है और फिर 3000 मि.ली. तरल से जोड़ को धोकर साफ करता है। यह था चिकित्सा विज्ञान। जिनको दवाओं से आराम नहीं मिला वे यह शल्य क्रिया करवाते थे। 1990 के दशक में प्रति वर्ष अमेरिका में 6,50,000 वृद्धों में यह आपरेशन किया जाता था। प्रति रोगी एक आपरेशन का खर्चा था 55,000 डालर यानी लगभग 30 लाख रूपये। देश में प्रति वर्ष मात्र इस इलाज पर

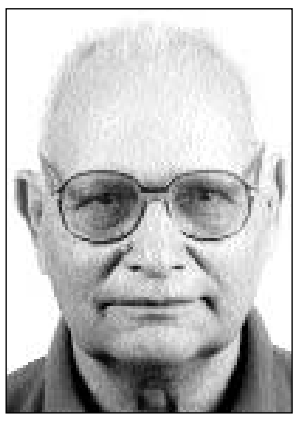

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

अरबों का व्यय।

इस दूरबीन विधि से लाभ क्यों होता है, जोड़ की सफाई से होता है? जोड़ की धुलाई से होता है? या ऐसे ही हो जाता है (प्लेसीबो एफेक्ट), इसका विधिवत वैज्ञानिक आकलन नहीं किया गया था। शल्य क्रिया में ऐसा करना आसान नहीं होता। दवाओं में ऐसा आकलन करना अनिवार्य है ओर सरल भी – बिना बताए रोगियों के एक समूह को असली दवा और दूसरे समूह को वैसी ही फर्जी (प्लेसीबो) दवा दे कर। स्वेच्छा से करवाई ब्लांइण्ड ट्रायल। लेकिन फर्जी शल्य क्रिया मुश्किल प्रावधान है। ह्यूस्टन वेटरन्स मेडिकल सेंटर के डॉ. जे बी मोस्ले और उनके साथियों ने यह अनुसंधान किया। 1995 से 1998 तक उन्होंने ओस्टियो आर्थराइटिस के 180 रोगियों को स्वेच्छा से इस प्रयोग में भाग लेने को प्रेरित किया। बता दिया गया था कि उन्हे तीन समूह में रेन्डम (बेतरतीब) विधि से बाँटा जाएगा।

कौन रोगी किस समूह में जायगा उसे नहीं मालूम होगा। एक समूह में सर्जन द्वारा दूरबीन विधि से जोड़ के अंदर की सफाई (डिब्राइडमेंट), दूसरे में तरल से धुलाई (लेवाज) और तीसरे में केवल जोड़ में छेद किए जाएँगे घ्ब्ल्प्प्ब् ॅप्ब् ल्ैब किसी भी समूह के रोगी को न बताया जाएगा, न मालूम होगा कि उसके जोड़ में क्या किया गया है। आपरेशन के बाद सभी का समय-समय पर विधिवत परीक्षण होगा और मान्य मानदंडों के अनुरूप आकलन। आकलनकर्ता चिकित्सक को भी यह नहीं मालूम होगा कि रोगी किस समूह का है। 180 में से 164 रोगी दो साल के पूरे काल में आकलन के लिए उपलब्ध रहे।

आकलन के विस्तृत सांख्यिक (स्टेस्टिकल) तुलनात्मक विश्लेषण पर ज्ञात हुआ कि तीनों समूह में दर्द निवारण व चलने में लाभ एक जैसा था। प्लेसीबो की तुलना में शल्य क्रिया से कोई लाभ नहीं था। अर्थात् रोगी जो लाभ महसूस करते थे वह प्लेसीबो एफेक्ट था, ओस्टियो आर्थराइटिस की दूरबीन शल्य क्रिया विधि असरहीन, निरर्थक साबित हुई। कल का विज्ञान विकृत ज्ञान साबित हुआ।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

नववर्ष पर रोशनी से जगमगाया मेहंदीपुर बालाजी आस्था धाम

मेहंदीपुर बालाजी, (निसं)। आस्था धाम मेहंदीपुर बालाजी में नववर्ष को लेकर शुक्रवार से ही मंदिर की सजावट का दौर शुरू हो गया। मंदिर के गर्भ गृह सहित पूरे मंदिर को रंगीन जगमगाती रोशनी वे लाइटों से सजाया गया। शनिवार से ही मेहंदीपुर बालाजी में श्रद्धालुओं का पहुंचना शुरू हो गया था। इस बार नव वर्ष में मेहंदीपुर बालाजी में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ रही। दौसा जिला व करौली जिला दोनों तरफ लंबी-लंबी कतारें लग गई।

■ मेहंदीपुर बालाजी में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ रही

वहीं नववर्ष के मौके पर मेहंदीपुर बालाजी मंदिर महंत नरेश पुरी महाराज ने स्वयंभू बालाजी महाराज की प्रतिमा का पंचामृत से स्नान करवा कर सोने का चोला चढ़ ाया ।वही मनमोहक श्रृंगार किया और महाराज श्री के सानिध्य में विशेष पूजा अर्चना की गई ।इस दौरान मंदिर में छप्पन भोग की झांकी सजाई गई और महा आरती का आयोजन हुआ।

आस्था धाम मेहंदीपुर बालाजी में महंत ने विशेष पूजा-अर्चना कर आरती की।

सुबह सबसे पहले मंदिर में पूजा-अर्चना की गई और उसके बाद श्रद्धालुओं के लिए दर्शन के लिए मंदिर के पट खोल दिए गए। जिसम श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध तरीके से बालाजी महाराज के दर्शन किए। बालाजी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नरेश पुरी महाराज ने बालाजी आने वाले सभी श्रद्धालुओं को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं दी और उन्होंने बालाजी महाराज के चरणों में प्रार्थना की सभी के घर परिवार में सुख चैन रहे। वहीं उन्होंने देश में अमन चैन की दुआ मांगी और बालाजी महाराज से कोरोना मुक्ति की भी बालाजी महाराज से प्रार्थना की महाराज श्री द्वारा बालाजी आने वाले भक्त किसी भी तरीके की दर्शन के दौरान समस्या ना हो इसके लिए भी मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारी बार-बार व्यवस्थाओं को देखते हुए नजर आये। वहीं महाराज श्री भी स्वयं व्यवस्थाओं का जायजा लेते रहे।

चप्पे-चप्पे पर पुलिस के जवान तैनात रहे। मेहंदीपुर बालाजी मंदिर में श्रद्धालुओं की आवक को देखते हुए टोडाभीम पुलिस उपाधीक्षक फूलचंद मीणा थाना अधिकारी शैलेंद्र सिंह सहित पुलिस के जवान व अतिरिक्त जाब्ता मौके पर मौजूद रहा और कतार में लगने वाले श्रद्धालुओं को व्यवस्थित कतार में लगाने में सहयोग करते रहे। वहीं मेहंदीपुर बालाजी थाना के थाना अधिकारी अजीत बड़सरा वह वृत मानपुर पुलिस उपाधीक्षक दीपक मीणा सहित पुलिस का भारी जाब्ता दौसा की तरफ भी तैनात रहा। वहीं अधिक भीड़ के चलते थाना अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने टोडाभीम की तरफ से आने वाले सभी वाहनों को अंदर आने से रोक दिया गया। जिससे कि श्रद्धालुओं को वाहनों से किसी भी तरीके की कोई परेशानी ना हो।

रिकार्ड पर्यटकों के आने से 'घना' गुलजार

भरतपुर में केवलादेव राष्ट्रीय पार्क घना रिकार्ड पर्यटकों के आने से गुलजार है।

भरतपुर, (निसं)। विश्व विख्यात केवलादेव राष्ट्रीय पार्क घना में रिकार्ड पर्यटकों के आने से घना गुलजार है। शीतकालीन अवकाश से ही केवलादेव घना में भारी संख्या में देशी विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुंच रहे हैं। हालत यह है कि घने के अंदर सैलानियों को घुमाने के लिए लगे रजिस्टर्ड रिक्शा चालक भी कम पड़ रहे हैं। जिससे केवलादेव राष्ट्रीय पार्क में सैलानियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बाहर से रिक्शा चालकों को बुलाना पड रहा है।

कोरोना के चलते पिछले दो वर्ष सरकार की बंदिशों एवं स्वास्थ्य के प्रति सावधानी के चलते केवलादेव राष्ट्रीय पार्क में बहुत कम संख्या में ही सैलानी घूमने आए थे। लेकिन इस बार कोरोना का प्रभाव ना के बराबर है। केवलादेव राष्ट्रीय पार्क में समन्दर पार दूर-दूर से पक्षी प्रवास के लिए आते हैं। सर्दी का मौसम इन पक्षियों के लिए अच्छा माना जाता है। वर्तमान में केवलादेव नेशनल पार्क में हजारों की संख्या में लगभग 300 प्रकार के देशी-विदेशी पक्षी डेरा डाले हुए हैं। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में इन दिनों चाइना कूट, सबलर, इंडियन सारस, ओपन बिल स्टोर्क, स्पून बिल, परपल हेरन समेत कई देशी विदेशी पक्षियों को देखने के लिए पर्यटक आ रहे हैं। घना पक्षी विहार की झीलों में पर्याप्त पानी होने से पक्षियों को भी सुकून मिल रहा है, और उन्हें पानी में से भोजन के रूप में मछली, वनस्पति मिल रही है। पूर्वी राजस्थान में केवलादेव राष्ट्रीय पार्क प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। माना जाता है कि जो पर्यटक आगरा का ताजमहल देखने के लिए आते हैं। अमूमन वे पर्यटक केवलादेव राष्ट्रीय पार्क में भी घूमने आते हैं।

■ पर्यटक घना में पक्षियों को निहार हो रहे आनंदित

नववर्ष पर मंदिरों में श्रद्धालुओं का रहा तांता

करौली के कैला देवी के मंदिर में श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी।

करौली, (निसं)। नव वर्ष के अवसर पर लोगों ने एक दूसरे को विभिन्न माध्यमों से बधाइयां दी तो वहीं मंदिरों में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। रविवार को प्रात: से ही लोग नहा-धोकर देव दर्शन कर दिन की शुरुआत करते देखे गए।

इस दौरान जन-जन के आराध्य देव भगवान मदन मोहन जी महाराज के मंदिर, गोविंद देव जी मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों के अलावा उत्तर भारत के प्रमुख शक्तिपीठ तीर्थ स्थल आस्था धाम कैलादेवी में विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालुओं ने माता की चौखट पर मत्था टेक कर नई साल में अमन चैन और खुशहाली की मनौती मांगी। इस दौरान यहां जिला पुलिस प्रशासन भी चौकन्ना नजर आया।

■ श्रद्धालुओं ने मत्था टेक कर नई साल में अमन चैन और खुशहाली की मनौती मांगी

करौली के मदन मोहन जी महाराज के मंदिर में प्रात: मंगला आरती से ही श्रद्धालुओं का दर्शनों के लिए तांता लग गया और दोपहर में लोगों ने छप्पन भोग की झांकी के दर्शन लाभ लिए। यह सिलसिला रात्रि शयन आरती पट मंगल तक चलता रहा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 2 जनवरी, 2023

पौष मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र दिन 2:24 तक, साध्य योग मंगलवार प्रात: 6:52 तक, वणिज करण प्रात: 7:48 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:52 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 2:24 तक है। भद्रा प्रात: 7:48 से रात्रि 8:24 तक है। आज पुत्रदा एकादशी व्रत और मन्वादि है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:38 तक, शुभ 9:55 से 11:13 तक, चर 1:48 से 3:06 तक, लाभ-अमृत 3:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:41

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आपश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा।

तुला
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृश्चिक
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।